दिल्ली फतेह

-कुलमोहन सिंह

सरदार बघेल सिंह 1725-1802 उन महान योद्धाओं में से थे, जिन्होंने पंजाब व उससे बाहर शासन की नींव रखी। किंतु 1783 में दिल्ली में विजय हासिल की एवं तत्पश्चात राजधानी में 7 ऐतिहासिक गुरुद्वारों की स्थापना की; जो कि सदा के लिए दिल्ली में सिखों की विरासत बन गई।

करोरा सिंह के आकस्मिक निधन के बाद, सरदार बघेल सिंह. करोरा मिसल के 1765 में उत्तराधिकारी बने। 1765, 1767 के मध्य सिखों ने 15 बार दिल्ली में प्रवेश किया एवं सरदार बघेल सिंह ने अधिकतर हमलों को अंजाम दिया था।

बाबा बघेल सिंह ने जत्थेदार जस्सा सिंह आहलूवालिया, जत्थेदार जस्सा सिंह रामगढ़िया, जत्थेदार तारा सिंह घेवा एवं जत्थेदार महासिंह शुक्रिया के साथ मिलकर 8 मार्च, 1783 को जमुना नदी पार करते हुए 40000 योद्धाओं के साथ सरदार बघेल सिंह ने दिल्ली में बुराड़ी घाट से प्रवेश किया। उन्होंने अपनी सेना को 3 भागों में विभाजित किया 5000 सैनिकों को मजनू का टीला पर छोड़ दिया, 5000 सैनिकों की टुकड़ी को अजमेरी गेट भेजा गया एवं 30,000 जिसमें अधिकतर घुड़सवार थे, को सब्जी मंडी व कश्मीरी गेट के बीच भेजा गया जो आज तीस हजारी के नाम से जाना जाता है। इस स्थान को आज तीस हजारी इसलिए कहा जाता है, क्योंकि लाल किला पर आक्रमण से पूर्व 30,000 सैनिक यहाँ रुकं थे। यह विशाल सिख सेना मलका गंज, मुगलपुरा एवं सब्जी मंडी के क्षेत्रों में फैली हुई थी।

शासक शाहआलम द्वारा 8 मार्च 1783 को मिर्जा शिकोह के नेतृत्व में भेजे गए मुगलों ने सिखों के आक्रमण को रोकने का प्रयास किया, किंतु मेहताबपुर के किले में सिखों द्वारा पराजित हुए और पुनः लाल किला में भाग गए। 9 मार्च को फजल अली खान का प्रयास भी उन्हें रोकने में सफल नहीं हो सका। सिख सेना ने लाल किला की तरफ रुख किया. दूसरी टुकड़ी ने अजमेरी गेट से शहर पर आक्रमण किया एवं हौज खास क्षेत्र पर अधिकार जमाया। आगे बढ़ते हुए सिखों द्वारा पराजय को अवश्यंभावी मानकर मुगल सेना लड़ाई का सामना करने के स्थान पर लाल किला की विभिन्न इमारतों में छिप गई। 11 मार्च 1783 को सरदार बघेल सिंह ने अपनी विजयी सेना के साथ लाल किले में प्रवेश करते हुए, लाहौरी गेट, मीना बाजार एवं नकारखाना होते हुए अंततः दीवान-ए-आम पहुंचे जहाँ मुगल शासक अपनी अदालतें लगाते थे।

11 मार्च, 1783 को जब सेना ने दिल्ली के लाल किला में प्रवेश किया और दीवान-ए-आम पर कब्जा किया, तब मुगल शासक शाह आलम द्वितीय ने उनके साथ एक संधि की जिसके अंतर्गत बघेल सिंह को दिल्ली में ऐतिहासिक स्थानों पर गुरुद्वारे स्थापित करने की आज्ञा दी गई एवं चुंगी कर के रूप में छःआना, मुगल राज्य से लेने की संधि हुई।

दीवान-ए-आम पर अधिकार हासिल करने के बाद, लाल किला के प्रवेश द्वार पर खालसा झंडा फहराया गया। दीवान-ए-आम में सिख जरनैलों की अपनी पहली बैठक में विजयी सेना में से 5 सेनापतियों को चुना

जिन्हें 'पंज प्यारा' के नाम से जाना गया। 67 वर्ष पूर्व जहाँ बंदा सिंह बहादुर एवं उनके 740 सिपाही शहीद हुए थे. आज वही स्थान सिख सेना द्वारा अधिग्रहित कर खालसाई निशान लालकिला पर झुलाया गया। अधिकार के पश्चात, मुगल शासक शाह आलम ने अपने अधिवक्ता रामदयाल एवं बेगम समरू के साथ सरदारों के साथ समझौते का निवेदन किया। बेगम समरू एक अत्यंत होशियार दूरदर्शी एवं सक्षम राजनीतिज्ञ थी, एवं मुगलों में उसका अच्छा प्रभाव था। बड़े ही मान एवं सम्मान के साथ बेगम समरू ने सरदार बघेल सिंह को अपना भाई माना एवं दो चीजों के लिए निवेदन किए-शाह आलम को जीवनदान एवं लाल किला सामान्य नियंत्रण में।

उपर्युक्त दो रियायतों के स्थान पर सरदार बघेल सिंह सिख गुरु की याद में दिल्ली में गुरुद्वारों की स्थापना करना चाहते थे। उन्होंने 4 शर्तें रखी थी मुगल उन स्थानों को वापस कर दें जो कि सिख गुरु के दर्शन से पवित्र हुए थे, जहाँ गुरु तेगबहादुर जी शहीद हुए थे, वह स्थान जहाँ गुरु नानक देव जी, गुरु हरगोबिंद साहिब गुरु हरकिशन जी एवं गुरु गोबिंद सिंह जी गए थे एवं वे स्थान भी जहाँ माता सुंदरी एवं माता साहिब कौर लंबे समय तक रूकी थी।

सरदार बघेल सिंह ने मांग की कि शाह आलम एक अधिसूचना जारी करें जिसमें सिख सेना को गुरुद्वारे बनाने की आज्ञा दी जाए, इस संबंध में जिन स्थानों पर गुरुद्वारों की स्थापना करनी थी वे सात स्थान थे।

उनको तीसरी शर्त थी कि दिल्ली कोतवाली को सिख सेना के सपुर्द दिया जाए और शाह आलम प्रत्येक रुपए में से छः आना राजस्व के रूप में दे, एवं उस कोष का ऐतिहासिक गुरुद्वारों को बनाने एवं शिवसेना के वेतन के भुगतान के रूप में उपयोग किया जाए।

सरदार अपेल सिंह की चौथी शर्त थी कि जब तक ऐतिहासिक गुरुद्वारों की स्थापना का कार्य पूरा हो जाए सिख सेना की 4000 सैनिकों की दुकडी दिल्ली में तैनात रहेगी और इसका खर्चा शाहीखजाने से किया जाएगा।

उपर्युक्त सभी से निवेदन विदित होता है कि सिख जरनैलों की गुरुओं एवं अपने धर्म के प्रति अपार श्रद्धा थी। उन्होंने विजित दिल्ली पर शासन करने की अपेक्षा ऐतिहासिक गुरुद्वारों को बनाने व स्थापना करने की प्राथमिकता पर जोर दिया।

पंजाब ऑफिस आने से पहले सरदार बघेल सिंह अंतिम बार नवंबर 1783 में शाह आलम द्वितीय से मिले थे। जब सरदार बघेल सिंह लाल किला छोड़ रहे थे तब शाह आलम ने उपहारों से लदा हुआ हाथी, 5 घोड़े, हीरे जवाहरात से जड़ा हार एवं अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ देकर सम्मानित किया। सरदार बघेल सिंह पत्थर की वह सिल भी अपने साथ ले गए, जिस पर बैठकर औरंगजेब हुक्म सुनाया करता था। वह सिल आज भी हरिमंदिर साहब की परिक्रमा में है। सरदार बघेल सिंह जनवरी 1785 में सरदार गुरदित्त सिंह एवं सरदार जस्सा सिंह रामगढ़िया के साथ एक बार फिर दिल्ली आए। मराठा सरदार अंबाजी शाह आलम की मदद के

लिए आगे आए किंतु सरदार बघेल सिंह ने उनकी सेनाओं को पराजित कर दिया। इसके बाद समझौते के अनुसार शाह आलम ने प्रतिवर्ष सरदार बघेल सिंह को 10 लाख रूपये देने स्वीकार किए।